पाठ 12

पहरुए सावधान रहना

(प्रस्तुत कविता में कवि ने स्वतन्त्रता प्राप्ति के बाद देश के रक्षकों और सीमा के पहरेदारों को देश की सुरक्षा और नवनिर्माण के लिए प्रेरित किया है।)

आज जीत की रात

पहरुए, सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना।

प्रथम चरण है नये स्वर्ग का
है मंजिल का छोर
इस जन-मन्थन से उठ आयी
पहली रत्न हिलोर
अभी शेष है पूरी होना
जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की
विगत साँवली कोर

ले युग की पतवार
बने अम्बुधि महान रहना
पहरुए, सावधान रहना।

विषम शृंखलाएँ टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ
आज प्रभंजन बनकर चलतीं
युग बन्दिनी हवाएँ
प्रश्नचिह्न बन खड़ी हो गयीं
यह सिमटी सीमाएँ
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ
उठता है तूफान, इन्दु तुम
दीप्तिमान रहना
पहरुए, सावधान रहना।

ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है
शोषण से मृत है समाज
कमजोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नयी जिंदगी
यह विश्वास अमर है

जनगंगा में ज्वर,
लहर तुम प्रवहमान रहना
पहरुए, सावधान रहना |

- गिरिजा कुमार माथुर

गिरिजाकुमार माथुर का जन्म सन 1918 ई. को अशोकनगर (मध्य प्रदेश) में हुआ था| आप एक प्रसिद्ध कवि नाटककार और समालोचक के रूप में जाने जाते हैं| 'मंजीर' 'नाश और निर्माण' 'धूप के धान' 'शिला पंख चमकीले' आदि इनकी प्रसिद्ध काव्य रचनाएं हैं | इनकी कविताओं में देश प्रेम, प्रकृति प्रेम और मानव प्रेम समाहित है| वर्ष 1991 में आपको कविता संग्रह 'मैं वक्त के हूं सामने' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया | 10 जनवरी सन 1994 में आप का निधन हो गया|

शब्दार्थ

पहरुए = पहरेदार, देश के रक्षक, सीमा के प्रहरी | अचल = अटल, अडिग | मंजिल = पड़ाव | जन मंथन = जनता द्वारा किए गए आंदोलन से | रत्न हिलोर = रत्न से भरी जल तरंग | शेष = बाकी बचा हुआ | मुक्ता = मोती | विगत = अतीत, बीता हुआ | सांवली = परतंत्रता के समय की दुखद परिस्थितियां | कोर = किनारा, कोना | पतवार = नाव में पीछे लगी हुई तिकोनी लकड़ी जिसके द्वारा नाव को इधर-उधर मोड़ते या घुमाते हैं अंबुधि = समुद्र |

प्रश्न अभ्यास

कुछ करने को

1. अपने आसपास में रहने वाले किसी सैनिक से मिलकर उसके कार्यों के बारे में साक्षात्कार लीजिए |
2. देश प्रेम के इस गीत को कक्षा में 55 का समूह बनाकर प्रस्तुत कीजिए और देखिए कि किस समूह की प्रस्तुति बहुत अच्छी रही |
3. दी गई पंक्तियों के आधार पर कविता को आगे बढ़ाइए -

सुनो सुनो है भाई बहना

हरदम सावधान तुम रहना

.....|

.....|

विचार और कल्पना

1. नये युग की पतवार किनके हाथों में है ?

2. स्वतन्त्रता के बाद आज भी अनेक ऐसी समस्याएँ हंै, जो देश को तोड़ने में लगी हुई हैं। बताइए-

- ये समस्याएं कौन-कौन सी हैं ?
- आप इनको सुलझाने में क्या सहयोग दे सकते हैं ?

3. हमें अपने जीवन में कई चीजों से सावधान रहने कें लिए कहा जाता हैं। सोचकर लिखिए आपको किन-किन बातों के प्रति सावधान रहने को कहा जाता हैं ?

कविता से

1. 'जीत की रात' से कवि का क्या तात्पर्य है ?
2. 'ले युग की पतवार' किसके लिए कहा गया है ?
3. निम्नलिखित पंक्तियों का भाव स्पष्ट कीजिए -

(क) खुले देश के द्वार अचल दीपक समान रहना।

(ख) क्योंकि नहीं मिट पायी दुख की विगत साँवली कोर।

(ग) ले युग की पतवार बने अम्बुधि महान रहना।

4. कवि पहरुओं को सावधान रहने के लिए क्यों कह रहा है ?
5. कविता की रिक्त पंक्तियांें को पूरा कीजिए -

ऊँची हुई मशाल हमारी

.....

शत्रु हट गया, लेकिन उसकी

.....

शोषण से मृत है समाज

.....

किन्तु आ रही नयी जिन्दगी

.....

भाषा की बात

'दीप्तिमान' में 'दीप्ति' शब्द में 'मान' प्रत्यय जुड़ा है। मान/मती, वान/वती प्रत्यय जुड़ने से संज्ञा शब्द विशेषण बन जाता है। शब्द के अन्त में 'इ' रहने पर 'मान' अन्यत्र 'वान' जोड़ते हैं। नीचे लिखे शब्दों में मान/वान जोड़कर नया शब्द बनाइए -

बुद्धि, गति, गुण, शक्ति, रूप।